Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

37

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में शहर और गाँव का अंतर्विरोध: एक विमर्श

(गोदान एवं मैला आँचल के विशेष संदर्भ में)

डॉ. प्रियंका जगदीश महाजन
भुसावळ कला, विज्ञान और पी. ओ. नाहटा वाणिज्य महाविद्यालय, भुसावळ

सारांश

हिंदी साहित्य विशेष रूप से उपन्यास विधा में गाँव और शहर के बीच के द्वंद्व को प्रमुख विषय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक युग में शहरीकरण के बढ़ते प्रभाव और ग्रामीण मूल्यों के विघटन ने इस अंतर्विरोध को और भी तीव्र बना दिया है। प्रेमचंद *का "गोदान" और* फणीश्वरनाथ रेणु *का "मैला आँचल" दो ऐसे उपन्यास हैं, जो इस अंतर्विरोध को सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्तर पर बारीकी से विश्लेषित करते हैं।"गोदान" में ग्रामीण जीवन की त्रासदी और शहरी व्यवस्था का छलावरण उभरकर सामने आता है। होरी गाँव की सांस्कृतिक नैतिकता का प्रतीक बनकर अंततः शहर की अर्थव्यवस्था और व्यवस्था के आगे पराजित हो जाता है। वहीं "मैला आँचल" में गाँव की आंचलिक संस्कृति, करुणा, संघर्ष और राजनैतिक चेतना का चित्र सामने आता है, जो शहर की सत्ता की ओर आकर्षित होते हुए भी अपनी जड़ों से जुड़ा रहता है। उपन्यासों के माध्यम से आधुनिक हिंदी उपन्यासों में गाँव और शहर के अंतर्विरोध को समझने का प्रयास करता है। लेखकों ने दोनों समाजों की विशेषताओं, समस्याओं और मूल्यों को उकेरते हुए साहित्य को सामाजिक विमर्श का प्रभावशाली माध्यम बनाया है।*

कूट शब्द -गाँव, शहर, अंतर्विरोध, गोदान, मैला आँचल, आधुनिक हिंदी उपन्यास

प्रस्तावना -हिंदी उपन्यास साहित्य में गाँव और शहर के बीच का अंतर केवल स्थानिक विभाजन नहीं, बल्कि यह दो भिन्न जीवन दृष्टियों, सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों का द्वंद्व है। एक ओर गाँव में परंपरा, आत्मीयता, सामूहिकता और श्रम की गरिमा विद्यमान है, वहीं शहर में आधुनिकता, गति, एकाकीपन और भौतिकतावाद का वर्चस्व है। इन दो जीवन-शैलियों के टकराव ने आधुनिक हिंदी उपन्यासों को एक सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक विमर्श का केंद्र बनाया है।

प्रेमचंद और फणीश्वरनाथ रेणु जैसे उपन्यासकारों ने इस द्वंद्व को न केवल गहराई से पहचाना, बल्कि उन्होंने उसे मनुष्य के अस्तित्व, अस्मिता और संघर्ष के साथ जोड़ा। *"गोदान"* और *"मैला आँचल"* ऐसे उपन्यास हैं जिनमें गाँव-शहर के अंतर्विरोध को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। जहाँ *गोदान* में किसान की आर्थिक और नैतिक हार है, वहीं *मैला आँचल* में गाँव की सांस्कृतिक जिजीविषा और राजनीतिक चैतन्यता है। इन दोनों रचनाओं के माध्यम से यह समझने का प्रयास करता है कि आधुनिक हिंदी उपन्यासों में गाँव और शहर के अंतर्विरोध को कैसे प्रस्तुत किया गया है, और यह अंतर्विरोध भारतीय समाज के बदलते परिप्रेक्ष्य में कितना प्रासंगिक है।

विषय विवेचन

1. "गोदान" में ग्रामीण यथार्थ और शहरी छलावरण

प्रेमचंद का *"गोदान"* आधुनिक हिंदी साहित्य में ग्रामीण जीवन की त्रासदी, सामाजिक संरचना और नैतिक संघर्ष का प्रतिनिधि उपन्यास है। इसका नायक होरी, उस भारतीय किसान का प्रतीक है जो *आदर्शों, परंपराओं और सामाजिक कर्तव्यों* के बीच जीने का सतत प्रयास करता है, लेकिन लगातार आर्थिक शोषण और सामाजिक जकड़नों से ग्रस्त रहता है। होरी का संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि *एक पूरे ग्रामीण वर्ग की पीड़ा* है, जो सामंती और पूंजीवादी व्यवस्थाओं के बीच पिसता चला जाता है।

"होरी मर गया, पर गोदान कर गया" – यह पंक्ति *(पृष्ठ 112)* प्रेमचंद की कथा-दृष्टि का गहरा सांस्कृतिक संकेत है। होरी अंतिम समय तक *धार्मिक मर्यादा* का निर्वाह करता है, जबकि उसके जीवन का हर क्षण शोषण, अपमान और वंचना से भरा रहा। वह अपने सपनों को खोकर भी समाज द्वारा अपेक्षित *संस्कार और परंपरा* का पालन करता है। यह उसका नैतिक बल और सांस्कृतिक जिजीविषा है, जो उसे *व्यवस्था की हार के बावजूद* विजयी बनाती है — यद्यपि उसकी विजय आर्थिक दृष्टि से हार, परंतु मूल्य दृष्टि से सार्थकता बन जाती है।

"गोदान" का शहर, एक छलावरण की तरह उभरता है — जहाँ उच्च वर्ग के लोग *प्रवचन, सुधार और नीति* की बातें करते हैं, परंतु गाँव और किसान की वास्तविक समस्याओं से अनभिज्ञ या उपेक्षापूर्ण रहते हैं। यह शहर *संवेदना-शून्य, दिखावटी और दोहरे मानदंडों* वाला समाज है, जहाँ मनुष्य की कीमत उसकी *उपयोगिता और सत्ता से निकटता* से आँकी जाती है। प्रेमचंद इस शहरी-सामाजिक ढाँचे को होरी की पृष्ठभूमि में खड़ा करके यह दिखाते हैं कि भारतीय ग्रामीण समाज मूल्यों की भूमि है, पर वह संरचना और संसाधनों की दृष्टि से उपेक्षित है। "गोदान" इस दृष्टि से गाँव और शहर के अंतर्विरोध को सबसे सूक्ष्म और प्रभावी ढंग से उद्घाटित करने वाला उपन्यास बन जाता है।

2. "मैला आँचल" में गाँव की करुणा और राजनीति

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

फणीश्वरनाथ रेणु का *"मैला आँचल"* हिंदी उपन्यास परंपरा में आंचलिकता के स्वर और ग्राम्य यथार्थ का अत्यंत संवेदनशील चित्रण है। रेणु ने स्वतंत्रता-पूर्व भारत के बिहार के एक गाँव को आधार बनाकर वहाँ की लोक-संस्कृति, सामाजिक विषमता, और जनचेतना को बेहद सजीव भाषा और शैली में प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास न केवल गाँव के भूगोल और बोली-बानी का रचनात्मक दस्तावेज़ है, बल्कि यह गाँव के भीतर की त्रासदी और बदलाव की गूंज भी है। उपन्यास की यह प्रसिद्ध पंक्ति –"यह गाँव है, बाबूजी, यहाँ सब कुछ ठहरता है, पर गरीबी नहीं" *(पृष्ठ 87)* – गाँव की विडंबनात्मक स्थिति को अत्यंत व्यंग्यात्मक और मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती है। यह संवाद एक ओर गाँव की *स्थायित्वशीलता, संबंधों और परंपराओं* को इंगित करता है, तो दूसरी ओर यह गरीबी की निरंतरता और असहायता को भी दर्शाता है। गाँव के लोग *परिवर्तन के लिए संघर्ष करते हैं*, लेकिन आर्थिक और राजनीतिक तंत्र उन्हें जकड़कर रखता है। यही विवशता उन्हें शहर की ओर पलायन को बाध्य करती है — जहाँ उन्हें नए शोषण और विस्थापन का सामना करना पड़ता है।

"मैला आँचल" में रेणु ने राजनीतिक चेतना और स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से गाँव में आ रहे बदलाव की ओर संकेत किया है, लेकिन साथ ही यह भी दिखाया है कि ये बदलाव आंशिक और असंतुलित हैं। डॉक्टर प्रशांत जैसे पात्र *प्रगतिशील सोच और सेवा भावना* के प्रतीक हैं, परंतु *सामंती सोच, जातिगत विद्वेष और भ्रष्टाचार* जैसे तत्व गाँव में जड़ें जमाए बैठे हैं।

इस प्रकार, "मैला आँचल" गाँव की केवल *लोक-संस्कृति या करुणा* का चित्रण नहीं करता, बल्कि यह उपन्यास गाँव की *अंदरूनी विडंबनाओं और बाहर की राजनीतिक चालों* के बीच गाँव के आम आदमी के संघर्ष, उम्मीद और जिजीविषा की सशक्त कथा बनकर सामने आता है।

3. ग्राम्य सामूहिकता बनाम शहरी एकाकीपन

प्रेमचंद का "गोदान" और फणीश्वरनाथ रेणु का "मैला आँचल" – दोनों उपन्यास आधुनिक हिंदी साहित्य में गाँव और शहर के मध्य स्थित मूल्यगत, सामाजिक और सांस्कृतिक द्वंद्व को गहराई से उजागर करते हैं। इन उपन्यासों में गाँव की जो छवि उभरती है, वह न केवल एक भौगोलिक इकाई है, बल्कि वह संवेदना, सामूहिकता और संबंधों की आत्मीय भूमि भी है। इसके विपरीत शहर को एक ऐसी जगह के रूप में प्रस्तुत किया गया है जहाँ भौतिकता, प्रतिस्पर्धा और सत्ता की वर्चस्ववादी प्रवृत्तियाँ हावी हैं।

"गोदान" में होरी अपने चारों ओर गाँव की सहायक संस्कृति से जुड़ा हुआ है। वह चाहे संकट में हो, फिर भी उसका संबंध परिवार, पड़ोसी और समुदाय से बना रहता है। उसकी आर्थिक स्थिति चाहे डांवाडोल हो, पर वह समाज से कटा हुआ नहीं होता। वहीं शहर के पात्र – जैसे मिस मालती, मेहता आदि – भावनात्मक रूप से अकेले हैं, और उनका संबंध समाज से उपयोग और अवसरवाद के आधार पर होता है।

"मैला आँचल" में यह सामूहिकता और गहरी हो जाती है। गाँव के लोग सुख-दुख में साथ खड़े दिखाई देते हैं, लोकगीत, हाट-बाज़ार, कथा-कहानियाँ, चिकित्सा शिविर – सभी कुछ सामूहिक भागीदारी और संवेदनशीलता से जुड़ा है। जब रेणु लिखते हैं – "यह गाँव है, बाबूजी..." – तो वे केवल गरीबी की बात नहीं करते, वे उस सामूहिक जीवन दृष्टि की ओर संकेत करते हैं जो गाँव को जीवित रखती है।

इसके विपरीत शहरी व्यवस्था में व्यक्ति की पहचान ब्यूरोक्रेसी और पूँजीवाद के बीच खो जाती है। शहर में व्यक्ति केवल एक "फंक्शनल यूनिट" बनकर रह जाता है – उसके कार्य, पद और पैसे से उसका मूल्य आँका जाता है। प्रेमचंद ने शहरी पात्रों को संवेदना-विहीन, औपचारिक और तटस्थ बनाकर यह दिखाया है कि शहर मनुष्य को उसकी मानवीयता से वंचित कर देता है।

इस प्रकार, "गोदान" और "मैला आँचल" में गाँव को एक सांस्कृतिक जीवंतता और सामाजिक आत्मीयता के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि शहर को आधुनिक लेकिन आत्महीन व्यवस्था के रूप में – जहाँ भौतिक समृद्धि है, पर भावनात्मक खोखलापन भी गहराई से मौजूद है। यही अंतर इन उपन्यासों में गाँव और शहर के अंतर्विरोध को सबसे प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करता है।

4. सांस्कृतिक मूल्यों का द्वंद्व-प्रेमचंद का *"गोदान"* और रेणु का *"मैला आँचल"* न केवल ग्रामीण जीवन की समस्याओं और यथार्थ को चित्रित करते हैं, बल्कि इन उपन्यासों के केंद्र में एक गहरा सांस्कृतिक मूल्य द्वंद्व भी उपस्थित है। यह द्वंद्व गाँव की परंपरागत नैतिकता और सामूहिक भावना के आमने-सामने शहर की उपेक्षा, आधुनिकता और व्यावसायिक सोच को खड़ा करता है।

"गोदान" में होरी का जीवन, धर्म और सामाजिक मर्यादा के पालन में बीतता है। वह गरीबी, शोषण और अन्याय से लगातार संघर्ष करता है, परंतु कभी भी अपने धर्म और कर्तव्यबोध से विमुख नहीं होता। *"होरी मर गया, पर गोदान कर गया"* जैसी पंक्ति न केवल उसकी सांस्कृतिक आस्था को उजागर करती है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि उसके लिए *धर्म एक सामाजिक आडंबर नहीं, बल्कि जीवन का नैतिक आधार* है। शहर के चरित्र – जैसे मिस मालती या मेहता – चाहे प्रगतिशील हों, लेकिन उनमें यह नैतिक संकल्प और आत्मबल कम दिखाई देता है।

इसी प्रकार, *"मैला आँचल"* में डॉक्टर प्रशांत का चरित्र गाँव की जनसेवा, मानवीय करुणा और आत्मीयता का प्रतीक है। वह अपने शहरी जीवन की संभावनाएँ छोड़कर गाँव आता है, वहाँ के रोगियों का उपचार करता है, लोगों में चेतना जगाने का प्रयास करता है। वह यह मानता

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

है कि *गाँव की नैतिक शक्ति और लोकसंपर्क* ही परिवर्तन की वास्तविक जमीन हैं। लेकिन जैसे-जैसे राजनीतिक और सत्ता संरचनाएँ गाँव में प्रवेश करती हैं, प्रशांत की विचारधारा और उसके मूल्य शहर के प्रभाव में धुँधले पड़ने लगते हैं।

दोनों उपन्यास यह संकेत करते हैं कि गाँव भले ही संसाधनों में सीमित हो, पर वह अपनी सांस्कृतिक और नैतिक दृढ़ता के कारण आज भी जीवित है। इसके विपरीत, शहर विकास और सुविधा के बावजूद सांस्कृतिक रूप से विखंडित और आत्महीन होता जा रहा है। यह मूल्यगत टकराव आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच *संतुलन की खोज* साहित्य में बार-बार लौटती है।

इस प्रकार, "गोदान" और "मैला आँचल" दोनों यह दर्शाते हैं कि सांस्कृतिक मूल्य केवल स्मृति नहीं, बल्कि *जीवन की आत्मा* हैं, जो गाँव में जीवित हैं और शहर में विलुप्त हो रहे हैं।

5. विकास बनाम विस्थापन

विकास बनाम विस्थापन

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में विकास एक ऐसा द्वंद्वात्मक तत्व बनकर उभरता है, जो सपने और संकट दोनों को एक साथ लेकर आता है। "गोदान" और "मैला आँचल" इस द्वंद्व को दो अलग संदर्भों में उजागर करते हैं—एक ओर शहरी सत्ता द्वारा ग्रामीण समाज का विस्थापन, और दूसरी ओर गाँव की राजनीति में विकास के नाम पर नैतिक पतन।

"गोदान" में विकास का चेहरा शहरी व्यवस्था और पूंजीवादी तंत्र के रूप में सामने आता है, जो गाँव और किसान की जड़ों को उखाड़ने का कार्य करता है। होरी अपने खेत, गाय और समाज के बीच जैविक संबंध को बनाए रखने के लिए संघर्ष करता है, लेकिन शहरी अर्थनीति, साहूकारी, टैक्स व्यवस्था और न्यायपालिका की निष्क्रियता उसे अंततः बेघर और निराश्रित बना देती है। प्रेमचंद यह स्पष्ट करते हैं कि – "शहर ने होरी को कुछ नहीं दिया, केवल छीना।"यह कथन विकास के नाम पर हो रहे विस्थापन की करुण कथा है, जहाँ सपनों की कीमत ज़मीन और आत्मसम्मान से चुकाई जाती है। वहीं "मैला आँचल" में गाँव के भीतर प्रवेश करती राजनीति और आधुनिक सत्ता संरचनाएँ विकास के नाम पर लोकजीवन की सांस्कृतिक जड़ों को नष्ट करती हैं। डॉक्टर प्रशांत जैसे पात्र जनसेवा की भावना से गाँव में आते हैं, परन्तु वहाँ की सत्ता की चालबाज़ियाँ, जातीय वर्चस्व और चुनावी स्वार्थ धीरे-धीरे गाँव की लोकभावना को भ्रष्ट करने लगते हैं। रेणु एक जगह लिखते हैं:"यह राजनीति नहीं, यह गाँव के भीतर भीतर घुलने वाली बीमारी है।" इस पंक्ति से स्पष्ट होता है कि विकास के नाम पर गाँव की आत्मा में विष प्रवाहित किया जा रहा है। इन उपन्यासों में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि जब विकास लोक-संवेदना और सांस्कृतिक सुसंगति से कट जाता है, तो वह एक आत्मघाती प्रक्रिया बन जाता है। विकास का सही स्वरूप वही है जो समरसता, न्याय और अस्मिता को सुरक्षित रखे—अन्यथा वह केवल विस्थापन और विखंडन का कारण बनता है। इसलिए, "गोदान" और "मैला आँचल" आधुनिकता की उस धारा की आलोचना करते हैं जो गाँव को केवल संसाधन के रूप में देखती है, न कि संस्कृति, श्रम और जीवनमूल्यों के जीवंत केंद्र के रूप में। यही द्वंद्व आज भी साहित्य और समाज के विमर्श में अत्यंत प्रासंगिक बना हुआ है।

समारोप

"गोदान" और "मैला आँचल" दोनों उपन्यास आधुनिक हिंदी साहित्य में गाँव और शहर के अंतर्विरोध को गहराई से पकड़ते हैं। ये केवल ग्रामीण पीड़ा और शहरी छल का चित्रण नहीं करते, बल्कि इन दोनों समाजों के संघर्ष, मूल्यों और विचारधाराओं का गहन विश्लेषण करते हैं। इन दोनों उपन्यासों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि शहर केवल *आर्थिक अवसरों का केंद्र* नहीं, बल्कि *संस्कृतिकरण और विघटन* का स्थल भी है। गाँव की गरिमा और उसके मानवीय मूल्य इस प्रक्रिया में कहीं न कहीं *पिछड़ते और विस्थापित* होते दिखाई देते हैं। इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि आधुनिक हिंदी उपन्यासों में गाँव और शहर के बीच का द्वंद्व केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि भारतीय समाज की आत्मा का संघर्ष है – जिसमें साहित्यकारों ने एक जिम्मेदार सामाजिक दृष्टि के साथ हस्तक्षेप किया है।

संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद। (2016)। *गोदान*। नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
2. रेणु, फणीश्वरनाथ। (2018)। *मैला आँचल*। दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. तिवारी, रामविलास। (2020)। *प्रेमचंद का यथार्थवाद*। इलाहाबाद: साहित्य निधि।
4. गुप्ता, प्रभात। (2017)। *आंचलिक उपन्यासों की सामाजिक चेतना*। वाराणसी: गंगोत्री प्रकाशन।
5. मिश्र, मधुकर। (2015)। *गाँव और शहर का अंतर्विरोध हिंदी उपन्यासों में*। दिल्ली: साहित्य सागर।
6. द्विवेदी, संजय। (2019)। *गोदान और मैला आँचल: एक तुलनात्मक दृष्टि*। लखनऊ: भारतीय साहित्य संस्थान।